प्रकाशनार्थ

पटना, 18 मई। एशियन डेवलपमेंट रिसर्च इंस्टीट्यूट (आद्री) द्वारा आज "समान स्वास्थ्य सेवा और शिक्षा: पहुँच, समानता और अंतिम छोर तक सेवा" विषय पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया।

अमेरिका के यूनिवर्सिटी ऑफ नोट्रे डेम के प्रो. संतोष कुमार गौतम ने अपने विचारोत्तेजक संबोधन में बताया कि आर्थिक समृद्धि नागरिकों की उच्च श्रम उत्पादकता पर निर्भर करती है, जो उनके संतोषजनक संज्ञानात्मक विकास पर आधारित होती है। शोध से यह सिद्ध हुआ है कि जीवन के पहले एक हजार दिनों में, जिसमें गर्भावस्था की अवधि भी शामिल है, पर्याप्त पोषण भविष्य में बेहतर संज्ञानात्मक विकास के लिए अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने कहा कि गर्भावस्था की तीसरी तिमाही सबसे महत्वपूर्ण चरण होती है, जिसमें माताओं को पौष्टिक भोजन उपलब्ध कराया जाना चाहिए। उन्होंने यह भी बताया कि बिहार में पाँच वर्ष से कम आयु के 50 प्रतिशत बच्चे एनीमिया से ग्रस्त हैं। उन्होंने कहा कि नालंदा जिले में बच्चों के संज्ञानात्मक विकास की समस्या के समाधान हेतु मल्टी-न्यूट्रिएंट व्हीटामिक्स पाउडर उपलब्ध कराने का एक पायलट प्रोजेक्ट चल रहा है। इस अध्ययन के परिणाम अगले दो वर्षों में सामने आएंगे।

उद्घाटन सत्र में बिहार सरकार के आईटी एवं शहरी विकास तथा आवास मंत्री माननीय श्री नितीश मिश्रा ने कहा कि उनकी सरकार सार्वजनिक सेवाओं की आपूर्ति में सूचना प्रौद्योगिकी को एक उपकरण के रूप में उपयोग कर रही है। साथ ही राज्य के ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच डिजिटल विभाजन को कम करने का प्रयास भी किया जा रहा है। स्वास्थ्य विभाग के सचिव श्री कुमार रवि ने कहा कि राज्य के प्रत्येक नागरिक तक स्वास्थ्य सेवाओं की पहुँच सुनिश्चित करने के लिए निजी क्षेत्र की भागीदारी को बढ़ावा दिया जा रहा है। बिहार स्वास्थ्य सुरक्षा समिति के मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री शशांक शेखर सिन्हा ने बताया कि उनकी संस्था (आद्री) के तकनीकी सहयोग से राज्य में आयुष्मान भारत प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना को लागू कर रही है।

गेट्स फाउंडेशन के डॉ. देवेंद्र खंडैत ने गर्व के साथ कहा कि बिहार ने स्वास्थ्य के क्षेत्र में बड़ी सफलता हासिल की है, लेकिन अभी भी बहुत कुछ किया जाना बाकी है। समाज कल्याण विभाग के अपर मुख्य सचिव श्री एच.आर. श्रीनिवास ने कहा कि बिहार के बच्चों की स्थिति उतनी संतोषजनक नहीं है जितनी हम समझते हैं।

आद्री की सदस्य-सचिव डॉ. अश्मिता गुप्ता ने अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि बिहार इस समय एक अत्यंत महत्वपूर्ण परिवर्तन बिंदु पर खड़ा है। स्वास्थ्य, विद्यालय, सड़क और बिजली के आधारभूत संरचनाओं के निर्माण में काफी उपलब्धियाँ हासिल की गई हैं। अब अगला चरण मानव विकास और उसमें प्रौद्योगिकी की भूमिका पर केंद्रित होगा।

आद्री के सदस्यों ने रोग निगरानी, डिजिटलीकरण, स्वास्थ्य सेवाओं में नागरिक सहभागिता, स्वास्थ्य सेवाओं की पहुँच तथा अंतिम छोर तक टीकाकरण जैसे विषयों पर आद्री संस्थान द्वारा विकसित अंतर्दृष्टियों की प्रस्तुति दी।

इस कार्यशाला में लगभग 125 विद्वानों, शोधकर्ताओं और नीति-निर्माताओं ने भाग लिया। धन्यवाद ज्ञापन डॉ. अश्मिता गुप्ता द्वारा प्रस्तुत किया गया।

(अभिषेक प्रसाद)

प्रकाशनार्थ

पटना, 18 मई। एशियन डेवलपमेंट रिसर्च इंस्टीट्यूट (आद्री) द्वारा आज "समान स्वास्थ्य सेवा और शिक्षा: पहुँच, समानता और अंतिम छोर तक सेवा" विषय पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया।

अमेरिका के यूनिवर्सिटी ऑफ नोट्रे डेम के प्रो. संतोष कुमार गौतम ने अपने विचारोत्तेजक संबोधन में बताया कि आर्थिक समृद्धि नागरिकों की उच्च श्रम उत्पादकता पर निर्भर करती है, जो उनके संतोषजनक संज्ञानात्मक विकास पर आधारित होती है। शोध से यह सिद्ध हुआ है कि जीवन के पहले एक हजार दिनों में, जिसमें गर्भावस्था की अवधि भी शामिल है, पर्याप्त पोषण भविष्य में बेहतर संज्ञानात्मक विकास के लिए अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने कहा कि गर्भावस्था की तीसरी तिमाही सबसे महत्वपूर्ण चरण होती है, जिसमें माताओं को पौष्टिक भोजन उपलब्ध कराया जाना चाहिए। उन्होंने यह भी बताया कि बिहार में पाँच वर्ष से कम आयु के 50 प्रतिशत बच्चे एनीमिया से ग्रस्त हैं। उन्होंने कहा कि नालंदा जिले में बच्चों के संज्ञानात्मक विकास की समस्या के समाधान हेतु मल्टी-न्यूट्रिएंट व्हीटामिक्स पाउडर उपलब्ध कराने का एक पायलट प्रोजेक्ट चल रहा है। इस अध्ययन के परिणाम अगले दो वर्षों में सामने आएंगे।

उद्घाटन सत्र में बिहार सरकार के आईटी एवं शहरी विकास तथा आवास मंत्री माननीय श्री नितीश मिश्रा ने कहा कि उनकी सरकार सार्वजनिक सेवाओं की आपूर्ति में सूचना प्रौद्योगिकी को एक उपकरण के रूप में उपयोग कर रही है। साथ ही राज्य के ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच डिजिटल विभाजन को कम करने का प्रयास भी किया जा रहा है। स्वास्थ्य विभाग के सचिव श्री कुमार रवि ने कहा कि राज्य के प्रत्येक नागरिक तक स्वास्थ्य सेवाओं की पहुँच सुनिश्चित करने के लिए निजी क्षेत्र की भागीदारी को बढ़ावा दिया जा रहा है। बिहार स्वास्थ्य सुरक्षा समिति के मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री शशांक शेखर सिन्हा ने बताया कि उनकी संस्था (आद्री) के तकनीकी सहयोग से राज्य में आयुष्मान भारत प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना को लागू कर रही है।

गेट्स फाउंडेशन के डॉ. देवेंद्र खंडैत ने गर्व के साथ कहा कि बिहार ने स्वास्थ्य के क्षेत्र में बड़ी सफलता हासिल की है, लेकिन अभी भी बहुत कुछ किया जाना बाकी है। समाज कल्याण विभाग के अपर मुख्य सचिव श्री एच.आर. श्रीनिवास ने कहा कि बिहार के बच्चों की स्थिति उतनी संतोषजनक नहीं है जितनी हम समझते हैं।

आद्री की सदस्य-सचिव डॉ. अश्मिता गुप्ता ने अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि बिहार इस समय एक अत्यंत महत्वपूर्ण परिवर्तन बिंदु पर खड़ा है। स्वास्थ्य, विद्यालय, सड़क और बिजली के आधारभूत संरचनाओं के निर्माण में काफी उपलब्धियाँ हासिल की गई हैं। अब अगला चरण मानव विकास और उसमें प्रौद्योगिकी की भूमिका पर केंद्रित होगा।

आद्री के सदस्यों ने रोग निगरानी, डिजिटलीकरण, स्वास्थ्य सेवाओं में नागरिक सहभागिता, स्वास्थ्य सेवाओं की पहुँच तथा अंतिम छोर तक टीकाकरण जैसे विषयों पर आद्री संस्थान द्वारा विकसित अंतर्दृष्टियों की प्रस्तुति दी।

इस कार्यशाला में लगभग 125 विद्वानों, शोधकर्ताओं और नीति-निर्माताओं ने भाग लिया। धन्यवाद ज्ञापन डॉ. अश्मिता गुप्ता द्वारा प्रस्तुत किया गया।

(अभिषेक प्रसाद)